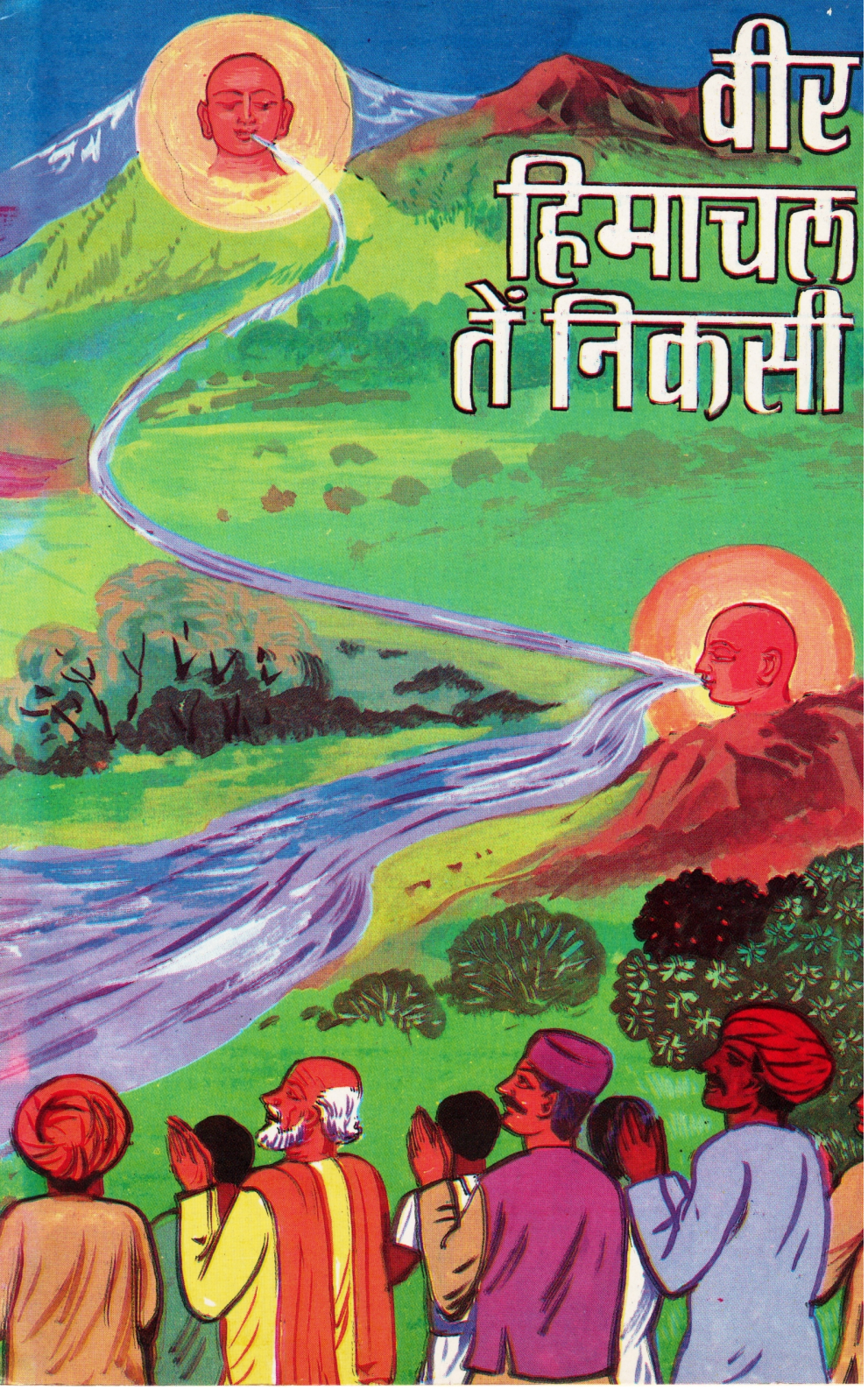
वीर
हिमाचल
तें निकसी

सत्साहित्य प्रकाशन ब्यूरो का तृतीय पुष्प

वीर हिमाचल तैं निकसी

सम्पादक :

पं. अभय कुमार जैन

शास्त्री, एम. काम.

अखिल बंसल

एम. ए.

प्रकाशक :

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

ए-४ बापूनगर, जयपुर- ३०२ ०१५

प्रथम आठ संस्करण : 30 हजार 600
(14 नवम्बर 80 से अद्यतन)
नवम् संस्करण : 3 हजार
(14 सितम्बर 1999)
योग : 33 हजार 600

मूल्य : चार रुपए

टाइपसैटिंग :
प्रिन्टोमैटिक्स
दुर्गापुरा, जयपुर–302018
फोन : 722274

मुद्रक :
पार्वती प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनर्स
आदर्शनगर, जयपुर

प्रकाशकीय

कलिकाल में एकमात्र शरणभूत जिनवाणी माता के प्रति अनन्त-अनन्त भक्ति-सुमन के रूप में प्रस्तुत संकलन "वीर हिमाचल तैं निकसी" का यह संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण प्रकाशित करते हुए हम अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

प्रचुर स्वसंवेदन रूप अतीन्द्रिय आनन्द में झूलनेवाले दिगम्बर संतों ने अपने निज-वैभव से तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित वस्तुस्वरूप को ही शास्त्रों में निबद्ध किया है। तीर्थंकरों एवं शुद्धोपयोगी संतों के अभावमय इस कलिकाल में शास्त्रों के माध्यम से ही सर्वज्ञदेव की वाणी प्रतिध्वनित होती है, जिसमें अवगाहन करके हम साक्षात पंचपरमेष्ठी के सान्निध्य का लाभ उठा सकते हैं।

जिनवाणी के रहस्योद्घाटन के सन्दर्भ में इस युग में आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेव कानजीस्वामी का अवतरण 20 वीं शताब्दी में जैनशासन की प्रभावना के इतिहास की अभूतपूर्व घटना है। उनके मंगलमय व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से समाज भलीभाँति परिचित है। गुजरात के प्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र शत्रुजंय के समीप स्थित तीर्थधाम सोनगढ़ में उनके श्रीमुख से समयसार, प्रवचनसार,नियमसार, पंचास्तिकाय, अष्टपाहुड़, षटखंडागम, परमात्प्रकाश, इष्टोपदेश, पद्मनन्दि पंच विशंतिका:, मोक्षमार्ग प्रकाशक, समयसार नाटक, समाधि तंत्र, योगसार, छहढाला आदि अनेक ग्रन्थों पर विवेचन के रूप में लगातार 45 वर्ष पर्यन्त अध्यात्मरस की गंगा प्रवाहित होती रही है जिसमें स्नान कर लाखों साधर्मी भाई भव-आताप शांत करने का प्रयत्न करते रहें। आज भी उनके प्रवचनों के केसिट तथा प्रकाशित संकलन समाज का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

वर्तमान में जिनवाणी के पठन-पाठन को स्वामीजी के निमित्त से प्रबल प्रोत्साहन मिला है, एतदर्थ समाज युगों-युगों तक उनका कृतज्ञ रहेगा। वर्तमान में बेगवती होती हुइं स्वाध्याय की प्रबल धारा में भीगा ऐसा कौन व्यक्ति होगा जिसके हृदय में जिनवाणी के प्रति अनन्त भक्तिरस का समूहन न उछल पड़े ?

प्रत्येक आत्मार्थी को जिनागम का मर्म भी तभी समझ में आ सकता है जब उसे उसके प्रति अनन्त महिमा हो। इसी भावना से अभिभूत होकर कविवर, भागचन्दजी, द्यानतरायजी, बुधजनजी, भैया भगवतीदासजी, भूधरदासजी, दौलतरामजी, महाचंदजी

आदि अनेक प्राचीन तथा वर्तमान कवियों ने अनेक आध्यात्मिक स्तुतियों व भजनों की रचनाएं की हैं। एतदर्थ हम सब इन सभी विद्वानों के लिए चिर कृतज्ञ हैं।

हमारे हृदय में भी जिनवाणी के प्रति इसीप्रकार की तरंगें उछलती हैं इसलिए प्रायः सारे देश में शास्त्र-सभाओं के बाद जिनवाणी स्तुति पढ़ने की पद्धति है। प्रायः सर्वत्र कोई विशिष्ट स्तुति प्रतिदिन दोहराई जाती है जबकि उक्त ज्ञानी गृहस्थ एवं विद्वानों द्वारा रचित अनेकानेक भावपूर्ण स्तुतियाँ यत्र-तत्र उपलब्ध होती हैं। ये सभी स्तुतियाँ जिनवाणी के प्रति उमड़ती हुई भक्ति का माध्यम बनकर जिनमंदिर में गूँज उठे –इसी पवित्र उद्देश्य से यह संकलन प्रकाशित किया गया था।

हमारे सहयोगी विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने और भी अनेक भावपूर्ण एवं प्रभावशाली स्तुतियों का संकलन करके इस संस्करण को परिवर्धित एवं पुनर्सम्पादित किया है तथा पुराने संस्करण को बारीकी से देखकर अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास किया है। उनके इस कार्य में डॉ. योगेश जैन शास्त्री का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। इस कृति की मुद्रण-व्यवस्था में संस्था के उपाध्यक्ष श्री अखिल बंसल ने विशेष सहयोग प्रदान किया है, एतदर्थ हम सभी सहयोगियों के अत्यन्त आभारी है।

आशा है कि समस्त स्वाध्याय प्रेमी शास्त्र-सभाओं में इस संकलन की प्रतियाँ प्रत्येक श्रोता के हाथ में देकर इसमें संकलित स्तुतियों का पाठ करके हमारे प्रयासों को सफल एवं सार्थकता प्रदान करेंगे । यद्यपि शुद्ध-मुद्रण के लिए पूरी सावधानी रखी गई है तथापि यदि कोई त्रुटि रह गयी हो तो पाठकों से हार्दिक अनुरोध है कि वे उसकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित अवश्य करें।

सभी जीव जिनवाणी की शरण में आकर अपना आत्मकल्याण करें यही मंगल भावना है।

ब्र. जतीशचन्द शास्त्री
अध्यक्ष

विषय-सूची

क्रम	स्तुति/भजन	पृष्ठ
१.	वीर हिमाचल तैं निकसी.....	७
२.	मिथ्यातम नासवे को.....	७
३.	साँची तो गंगा यह वीतराग-वाणी.....	८
४.	धन्य धन्य वीतराग वाणी.....	८
५.	जिनवरचरण-भक्ति वर गंगा.....	९
६.	केवलि-कन्ये वांगमय गंगे.....	९
७.	धन्य धन्य जिनवाणी माता.....	१०
८.	नित पीज्यो धी धारी.....	११
९.	जिनबैन सुनत मोरी भूल भगी.....	११
१०.	सारद ! तुम परसाद तै.....	१२
११.	चरणों में आ पड़ा हूँ.....	१२
१२.	हे जिनवाणी माता ! तुमको.....	१३
१३.	मेघ-घटा सम श्री जिनवाणी.....	१३
१४.	महिमा है अगम जिनागम की.....	१४
१५.	जिनवाणी के सुनै सौं.....	१४
१६.	भवदधि-तारक नवका.....	१५
१७.	धन्य धन्य है घड़ी आज की.....	१५
१८.	समयसार स्तुति (गुजराती) (संसारी जीवनां भावमरणो).....	१६
१९.	समयसार स्तुति (हिन्दी) (संर्वांगी 'सन्मति' श्रुतधारा).....	१७
२०.	जिनवाणी जान सुजान रे.....	१८
२१.	सुनकर वाणी जिनवर की.....	१८
२२.	बरसत ज्ञान सुनीर हो.....	१९
२३.	जिनवाणी सदा सुखदानी.....	१९
२४.	जिनवाणी गंगा जन्म-मरण हरणी.....	१९

२५.	म्हाँकै घट जिनधुनि अब प्रगटी.....	२०
२६.	समझत क्यों नहिं वाणी.....	२०
२७.	जिनवाणी माता रत्नत्रयनिधि.....	२१
२८.	अमृतझर झुरि-झुरि आवे.....	२२
२९.	जिनवाणी मोक्ष-नसैनी है.....	२२
३०.	अकेला ही हूँ मैं.....	२३
३१.	मन कैं हरष अपार.....	२३
३२.	जिनजी की वाणी भली रे.....	२४
३३.	जिनवाणी माता दर्शन की.....	२५
३४.	भव तारण शिव-सुख कारण.....	२५
३५.	जय-जय जग भरम-तिमिर हरन.....	२६
३६.	जिन की वानी अब मन मानी.....	२६
३७.	जिनवाणी जग मैय्या.....	२७
३८.	हो जिनवाणी जू तुम.....	२७
३९.	कलि में ग्रन्थ बड़े उपगारी.....	२८
४०.	जिनवाणी मो मन भावै.....	२९
४१.	जिनवाणी है चेतन हीरा जड़ी.....	२९
४२.	मुख औंकार धुनी सुनी.....	३०
४३.	समयसार की अद्‌भुत महिमा.....	३१
४४.	परम जननी धरम कथनी.....	३२
४५.	वस्तुत्त्व दर्शानी.....	३२
४६.	जान श्रुत पंचमि पर्व महान.....	३३
४७.	माँ जिनवाणी मुझ अन्तर में.....	३३
४८.	शान्ति सुधा बरसाये.....	३४
४९.	शिव सुखदानी है जिनवाणी.....	३४
५०.	मेरा शरण समयसार.....	३५
५१.	परम उपकारी जिनवाणी.....	३६
५२.	जिनवाणी माता शरण तिहारी आयो.....	३६

१. वीर हिमाचल तैं निकसी

वीर हिमाचल तैं निकसी, गुरु गौतम के मुख-कुण्ड ढरी है।
माह-महाचल भेद चली, जग की जड़तातप दूर करी है॥
ज्ञान-पयोनिधि माँहि रली, बहु भंग-तरंगनि सौं उछरी है।
ता शुचि-शारद गंगनदी प्रति, मैं अंजुलि करि शीश धरी है॥ १॥
या जग-मन्दिर में अनिवार, अज्ञान-अंधेर छयो अति भारी।
श्री जिन की धुनि दीप-शिखा सम, जो नहिं होत प्रकाशनहारी॥
तो किस भांति पदारथ-पाँति, कहाँ लहते ? रहते अविचारी।
या विधि "सन्त" कहैं धनि हैं, धनि हैं, जिन-बैन बड़े उपकारी॥ २॥

२. मिथ्यातम नासवे को.....

मिथ्यातम नासवे को ; ज्ञान के प्रकासवे को,
आपा-पर भासवे को, भानु-सी बखानी है।
छहों द्रव्य जानवे को, बन्ध-विधि भानवे को,
स्व-पर पिछानवे को, परम प्रमानी है॥
अनुभव बतायवे को, जीव के जतायवे को,
काहू न सतायवे को, भव्य उर आनी है।
जहाँ-तहाँ तारवे को, पार के उतारवे को,
सुख विस्तारवे को, ये ही जिनवाणी है॥

दोहा

हे जिनवाणी भारती, तोहि जपों, दिन रैन।
जो तेरी शरणा गहै, सो पावे सुख चैन॥
जा वाणी के ज्ञान तें, सूझे लोकालोक।
सो वाणी मस्तक नवों, सदा देत हों ढोक॥

* * *

३. साँची तो गंगा यह वीतराग वाणी.....

साँची तो गंगा यह वीतराग वाणी।
अविच्छिन्न धारा निज धर्म की कहानी ॥ टेक ॥
जामें अति ही विमल अगाध ज्ञान-पानी।
जहाँ नहीं संशयादि पंक की निशानी ॥ १ ॥
सप्तभंग जहँ तरंग उछलत सुखदानी।
सन्त चित मरालवृन्द रमैं नित्य ज्ञानी ॥ २ ॥
जाके अवगाहन तैं शुद्ध होय प्रानी।
"भागचन्द" निहचैं घटमाँहि या प्रमानी ॥ ३ ॥

४. धन्य धन्य वीतराग वाणी.....

धन्य धन्य वीतराग वाणी, अमर तेरी जग में कहानी।
चिदानन्द की राजधानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥ टेक ॥
उत्पाद-व्यय अरु ध्रौव्य स्वरूप, वस्तु बखानी सर्वज्ञ भूप।
स्याद्वाद तेरी निशानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥ १ ॥
नित्य-अनित्य अरु एक-अनेक, वस्तु कथंचित् भेद-अभेद।
अनेकान्तरूपा बखानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥ २ ॥
भाव शुभाशुभ बंधस्वरूप, शुद्ध चिदानंदमय मुक्तिरूप।
मारग दिखाती है वाणी, अमर तेरी जग में कहानी ॥ ३ ॥
चिदानंद चैतन्य आनंद धाम, ज्ञानस्वभावी निजातम राम।
स्वाश्रय से मुक्ति बखानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥ ४ ॥

* * *

५. *जिनवर चरण-भक्ति वर गंगा.....*

जिनवरचरण-भक्ति वर गंगा, ताहि भजो भवि नित सुखदानी।
स्याद्वाद-हिमगिरि तैं उपजी, मोक्ष-महासागरहिं[१] समानी[२] ॥ १ ॥
ज्ञान-विरागरूप दोऊ ढाये[३], संयम भाव मगर हित आनी।
धर्म-ध्यान जहाँ भँवर परत है, शम-दम जामें सम-रस पानी ॥ २ ॥
जिन-संस्तवन तरंग उठत हैं, जहाँ नहीं भ्रम-कीच निशानी।
मोह-महागिरि चूर करत हैं, रत्नत्रय शुद्ध पन्थ ढलानी ॥ ३ ॥
सुर-नर-मुनि-खग आदिक पक्षी, जहाँ रमत नित सम-रस ठानी।
'मानिक' चित्त निर्मल स्थान करि, फिर नहीं होत मलिन भवि प्राणी ॥ ४ ॥

६. *केवलि-कन्ये वांगमय गङ्गे.....*

केवलि-कन्ये वांगमय गङ्गे जगदम्बे अघ नाश हमारे।
सत्य स्वरूपे मंगल रूपे, मन-मन्दिर में तिष्ठ हमारे ॥ १ ॥
जम्बूस्वामी गौतम गणधर, हुए सुधर्मा पुत्र तुम्हारे।
जग तैं स्वयं पार ह्वै करके, दे उपदेश बहुत जन तारे ॥ २ ॥
कुन्दकुन्द अकलंकदेव अरु, विद्यानन्दि आदि मुनि सारे।
तव कुल-कुमुद चन्द्रमा ये शुभ, शिक्षामृत दे स्वर्ग सिधारे ॥ ३ ॥
तूने उत्तम तत्त्व प्रकाशे, जग के भ्रम सब क्षय कर डारे।
तेरी ज्योति निरख लज्जावश, रवि-शशि छिपते नित्य बिचारे ॥ ४ ॥
भव-भय पीड़ित व्यथित-चित्त जन, जब जो आये शरण तिहारे।
छिन भर में उनके तब तुमने, करुणा करि संकट सब टारे ॥ ५ ॥
जब तक विषय-कषाय नसै नहिं, कर्म-शत्रु नहिं जाय निवारे।
तब तक "ज्ञानानन्द" रहैं नित, सब जीवन तैं समता धारे ॥ ६ ॥

* * *

१. मोक्षरूपी महासमुद्र में, २ समा गई, ३ किनारे

७. धन्य-धन्य जिनवाणी माता.....

धन्य-धन्य जिनवाणी माता, शरण तुम्हारी आए।
परमागम का मन्थन करके, शिवपुर पथ पर धाए॥
माता दर्शन तेरा रे ! भविक को आनन्द देता है।
हमारी नैया खेता है॥ १॥

वस्तु कथन्चित् नित्य-अनित्य, अनेकान्तमय शोभे।
परद्रव्यों से भिन्न सर्वथा, स्वचतुष्टयमय शोभे॥
ऐसी वस्तु समझने से चतुर्गति फेरा कटता है।
जगत में फेरा मिटता है॥ २॥

नय निश्चय-व्यवहार निरूपण, मोक्षमार्ग का करती।
वीतरागता ही मुक्तिपथ, शुभ व्यवहार उचरती॥
माता तेरी सेवा से, मुक्ति का मारग खुलता है।
महा मिथ्यातम घुलता है॥ ३॥

तेरे अंचल में चेतन की, दिव्यचेतना पाते।
तेरी अमृत लोरी क्या है, अनुभव की बरसातें॥
माता तेरी वर्षा से, निजानन्द झरना झरता है।
अनुपमानन्द उछलता है॥ ४॥

नव-तत्त्वों में छिपी हुई जो, ज्योति उसे बतलाती।
चिदानन्द ध्रुव ज्ञायक घन का, दर्शन सदा कराती॥
माता तेरे दर्शन से, निजातम दर्शन होता है।
सम्यग्दर्शन होता है॥ ५॥

* * *

८. नित पीज्यो धी धारी.....

नित पीज्यो धी धारी, जिनवाणी सुधारस जानिके ॥ टेक ॥
वीर मुखारविंद तैं प्रगटी, जन्म-जरा गद[१] टारी।
गौतमादि गुरु उर-घट व्यापी, परम सुरुचि करतारी ॥ १ ॥
सलिल समान कलिलमलगंजन, बुधमनरंजनहारी।
भंजन विभ्रम धूलि प्रभंजन, मिथ्या जलद निवारी ॥ २ ॥
कल्याणकतरु उपवनधरनी, तरनी भवजलतारी।
बंधविदारन पैनी छैनी, मुक्ति-नसैनी सारी ॥ ३ ॥
स्व-परस्वरूप प्रकाशन को यह, भानुकला अविकारी।
मुनिमनकुमुदिनि-मोदनशशिभा, शमसुखसुमन सुवारी ॥ ४ ॥
जाके सेवत बेवत निजपद, नसत अविद्या सारी।
तीनलोकपति पूजत जाको, जान त्रिजग हितकारी ॥ ५ ॥
कोटि जीभ सौं महिमा जाकी, कहि न सके पविधारी[२]।
'दौल', अल्पमति केम कहै यह, अधम उधारन हारी ॥ ६ ॥

९. जिनबैन सुनत मोरी.....

जिनबैन सुनत मोरी भूल भगी ॥ टेक ॥
कर्म-स्वभाव, भाव चेतन को, भिन्न पिछानन सुमति जगी ॥ १ ॥
निज अनुभूति सहज ज्ञायकता, सो चिर रुष-तुष[३], मैल पगी ॥ २ ॥
स्याद्वाद धुनि निर्मल जल तैं, विमल भई समभाव लगी ॥ ३ ॥
संशय-मोह-भरमता विघटी, प्रगटी आतम सौंज सगी ॥ ४ ॥
'दौल' अपूरब मंगल पायो, शिवसुख लेन हौंस उमगी[४] ॥ ५ ॥

* * *

१ रोग, २ इन्द्र, ३ राग-द्वेष, ४ उत्साह उमड़ पड़ा

१०. सारद ! तुम परसाद तैं

सारद ! तुम परसाद तैं, आनन्द उर आया।
ज्यौं तिरसातुर जीव कौं, अमृत जल पाया ॥ टेक ॥
नय परमान निखेप तैं, तत्त्वार्थ बताया।
भाजी[१] भूल मिथ्यात की, निज निधि दरसाया ॥ १ ॥
विधिना[२] मोहि अनादि तैं, चहुँगति भरमाया।
ता हरिवै की विधि[३] सवै, मुझ माँहि बताया ॥ २ ॥
गुन अनन्त मति अलप तैं, मोपै जात न गाया।
प्रचुर कृपा लखि रावरी[४] 'बुधजन' हरषाया ॥ ३ ॥

११. चरणों में आ पड़ा हूँ.....

चरणों में आ पड़ा हूँ, हे द्वादशांग वाणी।
मस्तक झुका रहा हूँ हे द्वादशांग वाणी ॥ टेक ॥
मिथ्यात्व को नशाया, निज तत्त्व को बताया।
आपा-पराया भासा, हो भानु के समानी ॥ १ ॥
षड-द्रव्य को बताया, स्याद्वाद को जताया।
भव-फन्द से छुड़ाया, सच्ची जिनेन्द्र वाणी ॥ २ ॥
रिपु चार मेरे मग में, जन्जीर डाले पग में।
ठाड़े हैं मोक्षमग में, तकरार मोसों ठानी ॥ ३ ॥
दे ज्ञान मुझको माता, इस जग से तोडूं नाता।
होवे 'सुदर्शन' साता, नहिं जग में तेरी सानी ॥ ४ ॥

* * *

---

१ भागी, २ कर्मोंने, ३ उपाय, ४ आपकी

१२. हे जिनवाणी माता.....

हे जिनवाणी माता ! तुमको लाखों प्रणाम।
तुमको लाखों प्रणाम॥
शिवसुखदानी माता तुमको लाखों प्रणाम,
तुमको लाखों प्रणाम॥ टेक॥

तू वस्तुस्वरूप बतावे, अरु सकल विरोध मिटावे।
स्याद्वाद-विख्याता तुमको लाखों प्रणाम,
तुमको लाखों प्रणाम॥ १॥

तू करे ज्ञान का मण्डन, मिथ्यात्व कुमारग खण्डन।
हे तीन जगत की माता, तुमको लाखों प्रणाम,
तुमको लाखों प्रणाम॥ २॥

तू लोकालोक प्रकासे, चर-अचर पदार्थ विकासे।
हे विश्व-तत्त्व की ज्ञाता तुमको लाखों प्रणाम,
तुमको लाखों प्रणाम॥ ३॥

तू स्व-पर स्वरूप सुझावे, सिद्धान्त का मर्म बतावे।
तू मेटे सर्व असाता तुमको लाखों प्रणाम,
तुमको लाखों प्रणाम॥ ४॥

शुद्धातम तत्त्व दिखावे, रत्नत्रय पथ प्रगटावे।
निज आनन्द अमृतदाता तुमको लाखों प्रणाम।
तुमको लाखों प्रणाम॥ ५॥

हे मात ! कृपा अब कीजे, परभाव सकल हर लीजे।
'शिवराम' सदा गुण गाता तुमको लाखों प्रणाम,
तुमको लाखों प्रणाम॥ ६॥

* * *

१३. मेघ-घटा सम श्री जिनवाणी.....

मेघ-घटा सम श्री जिनवाणी ॥ टेक ॥
स्यात्पद चपला चमकत जामें, बरसत ज्ञान सुपानी ॥ १ ॥
धरम शस्य जातैं बहु बाढ़ै, शिव आनन्द फलदानी ॥ २ ॥
मोहन-धूल दबी सब यातैं, क्रोधानल सु बुझानी ॥ ३ ॥
'भागचन्द' बुधजन केकीकुल, लखि हरखै चितज्ञानी ॥ ४ ॥

१४. महिमा है अगम जिनागम की.....

महिमा है अगम जिनागम की ॥ टेक ॥
जाहि सुनत जड़-भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतम की ॥ १ ॥
रागादिक दुख-कारन जानैं, त्याग दीनी बुद्धि भ्रम की।
ज्ञान-ज्योति जागी उर अन्तर, रुचि बाढ़ी पुनि शम-दम की ॥ २ ॥
कर्मबन्ध की भई निरजरा, कारण परम-पराक्रम की।
'भागचन्द' शिव-लालच लाग्यौ, पहुँच नहीं है जहँ जम की ॥ ३ ॥

१५. जिनवाणी के सुनैं सौं.....

जिनवाणी के सुनैं सौं मिथ्यात मिटै,
मिथ्यात मिटै समकित प्रगटे ॥ टेक ॥
जैसें प्रात होत रवि ऊगत, रैन तिमिर सब तुरत फटै ॥ १ ॥
अनादिकाल की भूल मिटावै, अपनी निधि घट-घट उघटै ॥ २ ॥
त्याग विभाव सुभाव सुधारै, अनुभव करता करम कटै ॥ ३ ॥
और काम तजि सेवो वाकौं, या बिन नहिं अज्ञान घटै ॥ ४ ॥
'बुधजन' या भव परभव माहीं वाँकी हुंडी तुरत पटै ॥ ५ ॥

* * *

१६. भवदधि-तारक नवका.....

भवदधि-तारक नवका, जगमाहिं जिनवान ॥ टेक ॥
नय-प्रमान पतवारी जाके, खेवट आतम ध्यान ॥ १ ॥
मन-वच-तन सुध जे भवि धारत, ते पहुँचत शिवथान ॥ २ ॥
परत अथाह मिथ्यात भँवर ते, जे नहिं गहत अजान ॥ ३ ॥
बिन अक्षर जिनमुख तैं निकसी, परी वरनजुत कान ॥ ४ ॥
हितदायक 'बुधजन' को गनधर, गूंथे ग्रन्थ महान ॥ ५ ॥

१७. धन्य-धन्य है घड़ी आज की.....

धन्य-धन्य है घड़ी आज की, जिनधुनि श्रमण परी ।
तत्त्वप्रतीति भई अब मेरे, मिथ्या दृष्टि टरी ॥ टेक ॥
जड़ तैं भिन्न लखी चिन्मूरति, चेतन स्वरस भरी ।
अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, पर में सब परिहरी ॥ १ ॥
पुण्य-पाप विधि-बंध अवस्था, भासी अति दुखभरी ।
वीतराग विज्ञान भावमय, परनति अति विस्तरी ॥ २ ॥
चाह-दाह विनसी बरसी पुनि, समता मेघ झरी ।
बाढ़ी प्रीति निराकुल पद सौं, 'भागचन्द' हमरी ॥ ३ ॥

हे जिनवाणी माँ !
तेरा वैभव अमर रहे माँ !
हम दिन चार रहें ना रहें ।
भव के कष्ट नशें आश्रय से,
कर्म कलंक कोई ना रहें ॥

* * *

१८. समयसार स्तुति (गुजराती)

हरिगीतिका

संसारी जीवनां भावमरणो टालवा करुणा करी,
सरिता वहावी सुधा तणी प्रभु वीर ! तें संजीवनी ।
शोषाती देखी सरितने करुणाभीना हृदये करी,
मुनिकुन्द संजीवनी समयप्राभृत तणे भाजन भरी ॥

अनुष्टुप

कुन्दकुन्द रच्युं शास्त्र, साथिया अमृते पूर्या ।
ग्रंथाधिराज ! तारामां भावो ब्रह्मांडा भर्या ॥

शिखरिणी

अहो ! वाणी तारी प्रशमरस-भावे नितरती,
मुमुक्षुने पाती अमृतरस अंजलि भरी- भरी ।
अनादिनी मूर्छा विष तणी त्वराथी उतरती,
विभावेथी थंभी स्वरूप भणी दौड़े परिणति ।

शार्दूलविक्रीड़ित

तूं छे निश्चयग्रन्थ भङ्ग सघला व्यवहारना भेदवा,
तूं प्रज्ञाछीणी ज्ञान ने उदयनी संधि सहु छेदवा ।
साथी साधकनो तूं भानु जगनो संदेश महावीरनो,
विसामो भवक्लांतनां हृदयनो, तूं पंथ मुक्ति तणो ।

वसन्ततिलका

सूण्ये तणे रसनिबंध शिथिल थाय,
जाण्ये तने हृदय ज्ञानी तणां जणाय ।
तूं रुचतां जगतनी रुचि आलसे सौ,
तूं रीझतां सकलज्ञायकदेव रीझे ॥

अनुष्टुप

बनावुं पत्र कुन्दननां, रत्नोंनां अक्षरो लखी ।
तथापि कुन्दसूत्रोनां अंकाये मूल्य ना कदी ॥

१९. *समयसार स्तुति (हिन्दी)*

वीर छन्द

सर्वाङ्गी "सन्मति" श्रुतधारा, गुरु गौतम ने मुख धारी।
थी करुणा, हो भाव-मरण बिन, तृषित तप्त भवि संसारी॥
हृदय शुद्ध मुनि कुन्दकुन्द ने, वह संजीवन दया विचार।
घट 'प्रवचन" पंचास्ति' समय में, ली लख शोषित अमृत धार॥
कुन्द रचित पद सार्थक कर, मुनि अमृत ने अमृत सींचा।
ग्रन्थराज त्रय तुमने अद्भुत, मृदुरस ब्रह्म-भाव सींचा॥

रोला

वीर वाक्य यह अहो, नितारें साम्य सुधारस।
भर हृदयान्जलि पियें, मुमुक्षु वमें विषय-विष॥
गहरी मूर्छा प्रबल मोह, दुस्तर-मल उतरें।
तज विभाव हो स्वमुख परिणती ले निज लहरें॥
यह है निश्चय ग्रन्थ, भंग संयोगी भेदे।
अरु हैं प्रज्ञा-शस्त्र उदय मति संधी छेदे॥
साधक साथी जगत सूर्य, संदेश वीर का।
क्लान्त जगत विश्राम-स्थान, सतपथ सुधीर का॥
सुनें, समझ लें, रुचे, जगत रुचि से अलसावे।
पड़े बंधरस शिथिल हृदय ज्ञानी का पावे॥

दोहा

कुन्दन-पत्र बना लिखे, अक्षर रत्न तथापि।
कुन्द-सूत्र के मूल्य का, अंकन हो न कदापि॥

* * *

२०. जिनवाणी जान सुजान रे.....

जिनवाणी जान सुजान रे।
लाग रही चिर तैं विभावता, ताको कर अवसान रे ॥ टेक ॥
द्रव्य-क्षेत्र अरु काल-भाव की, कथनी को पहिचान रे।
जाहि पिछाने स्व-पर भेद सब, जान परत निदान रे॥ १ ॥
पूरब जिन जानी तिनही ने, भानी संसृतबान रे।
अब जाने अरु जानेंगे जे, ते पावें शिवथान रे॥ २ ॥
कह तुष-माष मुनि शिवभूति, पायो केवलज्ञान रे।
यों लखि "दौलत" सतत करो भवि, चिद्-वचनामृत पान रे॥ ३ ॥

२१. सुनकर वाणी जिनवर की.....

सुनकर वाणी जिनवर की, म्हारे हर्ष हिये न समाय जी ॥ टेक ॥
काल अनादि की तपन बुझानी, निज-निधि मिली अथाह जी ॥ १ ॥
संशय भ्रम औ विपर्यय नाशा, सम्यक् बुधि उपजाय जी ॥ २ ॥
अब निर्भय पद पायो उर में, बन्दूँ मन-वच-काय जी ॥ ३ ॥
नरभव सफल भयो अब मेरो, "बुधजन" भेंटत पाय जी ॥ ४ ॥

२२. बरसत ज्ञान-सुनीर हो.....

बरसत ज्ञान सुनीर हो, श्री जिन मुख-घन सौं ॥टेक ॥
शीतल होत सुबुद्धि मेदिनी, मिटत भवातप-पीर।
स्याद्वाद जय-दामिनि दमकै, होत निनाद गम्भीर ॥ १ ॥
करुणा-नदी बहै चहुँदिशि तैं, भरी सो निर्मल नीर।
"भागचन्द" अनुभव-मंदिर को, तजत न सन्त सुधीर ॥ २ ॥

* * *

२३. *जिनवाणी सदा सुखदानी.....*

जिनवाणी सदा सुखदानी।
जानि तुम सेवो भविक जिनवाणी ॥ टेक ॥
इतर नित्य निगोद माँहि जे, जीव अनन्त समानी।
एक साँस अष्टादश जामन मरण कहे दुखदानी ॥ १ ॥
पृथ्वी, जल, अरु, अग्नि, पवन में, और वनस्पति आनी।
इनमें जीव जिताय जितायर, जीव दया की कहानी ॥ २ ॥
नित्य अकारण आदि-निधनकरि, तीन लोक त्रयमानी।
करता हरता कोउ न याको, ऐसो भेद जतानी ॥ ३ ॥
वातवलय त्रय वेढि घनोदधि, धन तनु तीन रहानी।
इन आधार लोकत्रय राजत, और कछू न बखानी ॥ ४ ॥
ऐसी जानि जिनेश्वरवाणी, मिथ्यातम की मिटानी।
"बुधमहाचन्द्र" जानि जिन सेवे, धारि-धारि मन मानी ॥ ५ ॥

२४. *जिनवाणी गंगा जन्म-मरण हरणी.....*

जिनवाणी गंगा जन्म-मरण हरणी ॥ टेक ॥
जिन-उर पद्मकुण्ड तैं निकसी, मुख ही में गिर गिरणी ॥ १ ॥
गौतम मुख हेम कुल परबत, तल दरह बीच में ढ़रणी ॥ २ ॥
स्याद्वाद दोऊ तट अति दृढ़, तत्त्व नीर झरणी ॥ ३ ॥
सप्त भंगमय चलत तरंगिनी, तिनतैं फैल चलनी ॥ ४ ॥
"बुधमहाचन्द्र" श्रवण अंजुली तैं, पीवो मोक्ष करणी ॥ ५ ॥

* * *

२५. म्हाँकै घट जिनधुनि अब प्रगटी.....

म्हाँकै घट जिनधुनि अब प्रगटी ॥ टेक ॥

जाग्रत दशा भई अब मेरी, सुप्त दशा विघटी।
जग रचना दीसत अब मोकों, जैसी रहट घटी ॥ १ ॥

विभ्रम तिमिर हरन निज-दृग की, जैसी अन्जन वटी।
तातैं स्वानुभूति प्रापति तैं, पर-परणति सब हटी ॥ २ ॥

ताके बिन जो अवगम चाहै, सो तो शठ कपटी।
तातैं "भागचन्द" निशि-वासर, इक ताही को रटी ॥ ३ ॥

२६. समझत क्यों नहिं वाणी.....

समझत क्यों नहिं वाणी, अज्ञानीजन।
स्याद्वाद अंकित सुखदाई, भाखी केवलज्ञानी ॥ टेक ॥

जास लखैं निरमल पद पावै, कुमति कुगति की हानी।
उदय भया जिह में परगासी, तिहि जाना सरधानी ॥ १ ॥

जामें देव-धरम-गुरु वरनें, तीनों मुकति निसानी।
निश्चय देव-धरम-गुरु "आतम", जानत विरला प्रानी ॥ २ ॥

या जग माहीं तुझ तारन को, कारन नाव बखानी।
"द्यानत" सो गहिये निहचैं सैं, हूजे ज्यौं शिवथानी ॥ ३ ॥

लगै भूख ज्वर के गये, रुचि सों लेय अहार।
अशुभ गये शुभ के जगे, जाने धर्म विचार॥

* * *

२७. जिनवाणी माता रत्नत्रयनिधि दीजिये.....

जिनवाणी माता रत्नत्रयनिधि दीजिये ॥ टेक ॥
मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चरण में, काल अनादि घूमे।
सम्यग्दर्शन भयौ न तातें, दुःख पायो दिन दूने ॥ १ ॥
है अभिलाषा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण दे माता।
हम पावैं निजस्वरूप आपनों, क्यों न बनैं गुण-ज्ञाता ॥ २ ॥
जीव अनन्तानन्त पठाये, स्वर्ग-मोक्ष में तूने।
अब बारी है हम जीवन की, होवे कर्म विदूने ॥ ३ ॥
भव्य जीव हैं पुत्र तुम्हारे, चहुँगति दुःख से हारे।
इनको जिनवर बना शीघ्र, अब दे दे गुणगण सारे ॥ ४ ॥
औगुण तो अनेक होत हैं, बालक में ही माता।
पै अब तुम-सी माता पाई, क्यों न बनें गुण-ज्ञाता ॥ ५ ॥
क्षमा-क्षमा हो सभी हमारे, दोष अनन्ते भव के।
शिव का मार्ग बता दो, माता। लेहुशरण में अब के ॥ ६ ॥
जयवन्तो जिनवाणी जग में, मोक्षमार्ग प्रवर्तो।
श्रावक है "जयकुमार" बीनवे, पद दे अजर-अमर तो ॥ ७ ॥

सुरनर तिरियग योनि में, नरक निगोद भ्रमन्त।
महामोह की नींद सों, सोये काल अनन्त॥
जैसे ज्वर के जोर सों, भोजन की रुचि जाय।
तैसे कुकरम के उदय, धर्म वचन न सुहाय॥

* * *

२८. अमृतझर झुरि-झुरि आवे.....

अमृतझर झुरि-झुरि आवे जिनवाणी।
द्वादशांग बादल ह्वे उमड़े, ज्ञान अमृत रसखानी ॥ टेक ॥
स्याद्वाद बिजुरी अति चमके, शुभ पदार्थ प्रगटानी।
दिव्यध्वनि गंभीर गरज है, श्रवण सुनत सुखदानी ॥ १ ॥
भव्यजीव-मन भूमि मनोहर, पाप कूड़कर हानी।
धर्म बीज तहाँ ऊगत नीको, मुक्ति महाफल ठानी ॥ २ ॥
ऐसी अमृतझर अति शीतल, मिथ्या तपत भुजानी।
"बुधमहाचन्द्र" इसी झर भीतर, मग्न सफल सो ही जानी ॥ ३ ॥

२९. जिनवाणी मोक्ष-नसैनी है.....

जिनवाणी मोक्ष-नसैनी है ॥ टेक ॥
यह भवदधि से पार उतारे, पर भव को सुख दानी।
मिथ्यातिनि के मनहिं न भावे, भविजन के मन मानी ॥ १ ॥
तत्त्व-कुतत्त्व की खबर पड़े जब, जुदे-जुदे कर मानी।
'बाजूराय' भजो जिनवाणी, सुख दानी दुःख हानी ॥ २ ॥

जैसे पवन झकोरतें, जल में उठे तरंग।
त्यों मनसा चंचल भई, परिग्रह के परसंग॥
जहाँ पवन नहिं संचरे, तहाँ न जल कल्लोल।
त्यों सब परिग्रह त्यागतैं, मनसा होय अडोल॥

* * *

३०. अकेला ही हूँ मैं.....

अकेला ही हूँ मैं, करम सब आये सिमटिकें।
लिया है मैं तेरा, शरण अब माता ! सटकिकें ॥
भ्रमावत है मोकों, करम दुख देता जनम का।
करूँ भक्ति तेरी, हरो दुख माता ! भ्रमन का ॥ १ ॥

दुखी हुआ भारी, भ्रमत फिरता हूँ जगत में।
सहा जाता नाहीं, अकल घबरानी भ्रमन में ॥
करूँ क्या माँ मोरी, चलत वश नाहीं मिटनका।
करूँ भक्ति तेरी, हरो दुख माता ! भ्रमन का ॥ २ ॥

सुनो माता ! मोरी, अरज करता हूँ दरद में।
दुखी जानों मोकों, डरप कर आयो शरन में ॥
कृपा ऐसी कीजे, दरद मिट जावै मरन का :
करूँ भक्ति तेरी, हरो दुख माता ! भ्रमन का ॥ ३ ॥

पिलावै जो मोकों, सुबुधिकर प्यालाअमृतका।
मिटावै जो मेरा, सरव दुख माता फिरन का ॥
पड़ूँ पाँवाँ तेरे, हरो दुख सारा फिकर का।
करूँ भक्ति तेरी, हरो दुख माता ! भ्रमन का ॥ ४ ॥

३१. मन कैं हरष अपार.....

मन कैं हरष अपार, चित कैं हरष अपार, वानी सुनि ॥ टेक ॥
ज्यों तिरषातुर अमृत पीवत, चातक अंबुद धार ॥ १ ॥
मिथ्या-तिमिर गयो ततखिन हो, संशय भरम निवार ॥ २ ॥
तत्त्वारथ अपने उर दरस्यौ, जानि लियो निज सार ॥ ३ ॥
इन्द-नरिन्द्र-फनिन्द पदीधर, दीसत रंक लगार ॥ ४ ॥
ऐसा आनन्द "बूधजन" के उर, उपज्यौ अपरम्पार ॥ ५ ॥

३२. जिनजी की वाणी भली रे.....

सीमंधर मुख से फुलवा खिरें, जाकी कुन्दकुन्द गूँथे माल रे।
जिनजी की वाणी भली रे ॥ टेक ॥

वाणी प्रभु मन लागे भली, जिसमें सार समय शिरताज रे।
जिनजी की वाणी भली रे ॥ १ ॥

गूँथा पाहुड़ अरु गूँथा पंचास्ति, गूँथा जो प्रवचनसार रे।
जिनजी की वाणी भली रे ॥ २ ॥

गूँथा नियमसार, गूँथा रयणसार, गूँथा समय का सार रे ॥
जिनजी की वाणी भली रे ॥ ३ ॥

स्याद्वादरूपी सुगंधी भरा जो, जिनजी का ओंकार नाद रे
जिनजी की वाणी भली रे ॥ ४ ॥

वन्दूँ जिनेश्वर, वन्दूँ मैं कुन्दकुन्द, वन्दूँ यह ओंकार नाद रे।
जिनजी की वाणी भली रे ॥ ५ ॥

हृदय रहो मेरे भावे रहो, मेरे ध्यान रहो, जिन बैन रे।
जिनजी की वाणी भली रे ॥ ६ ॥

जिनेश्वरदेव की वाणी की गूँज, मेरे गूँजती रहो दिन रात रे।
जिनजी की वाणी भली रे ॥ ७ ॥

जहाँ अखण्डित गुण लगे, खेवट शुद्ध विचार।
आतम रुचि नौका चढ़े, पावहिं भव जल पार ॥
ज्यों अंकुश मानै नहीं, महामत्त गजराज।
त्यों मन तृष्णा में फिरै, गिनै न काज अकाज ॥

* * *

३३. जिनवाणी माता दर्शन की.....

जिनवाणी माता दर्शन की बलिहारियाँ ॥ टेक ॥
प्रथम देव अरहन्त मनाऊँ, गणधरजी को ध्याऊँ ।
कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, तिनको शीश नवाऊँ ॥ १ ॥

योनि लाख चौरासी माँहीं, घोर महादुःख पायो ।
ऐसी महिमा सुनकर माता, शरण तुम्हारी आयो ॥ २ ॥

जानै ताकौ शरणों लीनों, अष्ट कर्म क्षय कीनों ।
जामन-मरण मेट के माता । मोक्ष महापद दीनों ॥ ३ ॥

ठाड़े श्रावक अरज करत हैं, हे जिनवाणी माता !
द्वादशांग चौदह पूरव कौ, कर दो हमको ज्ञाता ॥ ४ ॥

३४. भव तारण शिव सुख कारण.....

भव तारण शिव-सुख कारण, जग में जगती जिनवाणी ॥ टेक ॥
स्याद्वाद की कथनीवाली, सप्तभङ्ग जानी ।
सप्त-तत्त्व निर्णय में तत्पर, नव-पदार्थ दानी ॥ १ ॥

मोह-तिमिर अंधन को जो है, ज्ञान शलाकानी ।
मिथ्यातप तपतन को जो है, मलियागर खानी ॥ २ ॥

इस पंचम कलिकाल माँहि, जो है केवली समान ।
धर्म-कुधर्म, कुदेव-देव, गुरु-कुगुरु बतानी ॥ ३ ॥

इन्द्र धरणेन्द्र खगेन्द्रादिक, पद की है निसानी ।
विषयादिक विष विध्वंस कर, सेव सुख सुधा पानी ॥ ४ ॥

कुमग गमन करता भविजन कूँ, सुद्ध मग जितानी ।
जड़पुद्गल रत "बुधमहाचन्द्र" कूँ, निज-पर समझानी ॥ ५ ॥

* * *

३५. *जय-जय जग भरम-तिमिर हरन.....*

जय-जय जग भरम-तिमिर हरन जिन धुनी ॥ टेक ॥
या बिन समुझे अजौं न सोंज निज मुनी।
यह लखि हम निज-पर अविवेकता लुनी ॥ १ ॥
जाको गनराज अंग-पूर्वमय चुनी।
सोई कही कुन्दकुन्द प्रमुख बहु मुनी ॥ २ ॥
जे चर जड़ भये पीय मोह बारुनी।
तत्त्व पाय चेते जिन थिर सुचित सुनी ॥ ३ ॥
कर्ममल पखारने हि विमल सुर धुनी।
तब विलम्ब अम्ब करो "दौल" उर पुनी ॥ ४ ॥

३६. *जिन की वानी अब मन मानी.....*

जिन की वानी अब मन मानी।
जाके सुनत मिटत सब दुविधा, प्रगटत निज-निधि छानी ॥ टेक ॥
तीर्थंकरादि महापुरुषन की, जामें कथा सुहानी।
प्रथम वे[१] यह भेद जास कौ, सुनत होय अघहानी ॥ १ ॥
जिनकी लोक अलोक काल, जुत च्यारों गति सहनानी।
दुतिय वेद[२] इह भेद सुनत होय, मूरख हूँ सरधानी ॥ २ ॥
मुनि श्रावक आचार बतावत, तृतीय वेद[३] यह ठानी।
जीव-अजीवादिक तत्त्वनि की, चतुरथ[४] वेद कहानी ॥ ३ ॥
ग्रन्थ बंध करि राखी जिनतैं, धन्य-धन्य गुरु ध्यानी।
जाके पढ़त सुनत कछु समझत, "जगतराम" से प्रानी ॥ ४ ॥

* * *

१ प्रथमानुयोग, २ करणानुयोग ३ चरणानुयोग, ४ द्रव्यानुयोग

३७. जिनवाणी जगमैय्या.....

जिनवाणी जगमैय्या जनम-दुख मेट दो ॥ टेक ॥
बहुत दिनों से भटक रहा हूँ ज्ञान बिना हे मैय्या।
निर्मल ज्ञान प्रदान सु कर दो तू ही सच्ची मैय्या ॥ १ ॥
गुणस्थानों का अनुभव हमको हो जावे जगमैय्या।
चढ़ै उन्हीं पर क्रम से हम फिर होवें कर्म खिपैया ॥ २ ॥
वस्तु एक अनेक रूप हैं अनुभव सबका न्यारा।
हर विवाद का हल हो सकता स्याद्वाद के द्वारा ॥ ३ ॥
मेट हमारा जन्म-मरण दुख इतनी विनती मैय्या।
तुम को शीश "त्रिलोकी" नमावे तू ही सच्ची मैय्या ॥ ४ ॥

३८. हो जिनवाणी जू तुम.....

हो जिनवाणी जू तुम मो कौं तारोगी ॥ टेक ॥
आदि-अन्त अविरुद्ध वचन तैं, संशय भ्रम निरवारोगी ॥ १ ॥
ज्यौं प्रतिपालत गाय वत्स कौं, त्यौं ही मुझकौं पारोगी ॥ २ ॥
सनमुख काल-बाघ जब आवैं, तब तत्काल उबारोगी ॥ ३ ॥
"बुधजन" दास बीनवै माता, या विनती उर धारोगी ॥ ४ ॥
उलझि रह्यो हूँ मोह-जाल में, ताकौं तुम सुरझाओगी ॥ ५ ॥

थांकी तो बानी में हो, निज स्व-पर प्रकाशक ज्ञान ॥ टेक ॥
एकीभाव भये जड़ चेतन, तिनकी करत पिछान।
सकल पदार्थ प्रकाशत जामें, मुकुर तुल्य अमलान ॥ १ ॥
जग चूड़ामनि शिव भये, ते ही जिन कीनों सरधान।
"भागचन्द" बुधजन ताही को निशदिन करत बखान ॥ २ ॥

* * *

३९. कलि में ग्रन्थ बड़े उपगारी.....

कलि में ग्रन्थ बड़े उपगारी।
देव-शास्त्र-गुरु सम्यक् सरधा, तीनों जिन तैं धारी॥ टेक॥
तीन बरस वसु मास पंद्र दिन, चौथा काल रहा था।
परम पूज्य महावीर स्वामी तब, शिवपुर राज लहा था॥ १॥
केवलि तीन, पाँच श्रुतकेवलि, पीछैं गुरुनि विचारी।
अंग पूर्व अब हैं, न रहेंगे, बात लिखी थिरकारी॥ २॥
भविहितकारन धर्म विचारन, आचारजों बनाये।
बहुतनि तिनकी टीका कीनी, अद्भुत अरथ समाये॥ ३॥
केवलि-श्रुतकेवलि यहँ नाहीं, मुनिगन प्रगट न सूझे।
दोऊ केवलि आज यही हैं, इनही को मुनि बूझे॥ ४॥
बुद्धि प्रगट कर आप बाँचिये, पूजा वंदन कीजे।
दरब खरचि लिखवाय सुधाय, सुपंडित जन को दीजै॥ ५॥
पढ़ते सुनते चरचा करते हैं, संदेह जु कोई।
आगम माफिक ठीक करै है, देख्यो केवलि सोई॥ ६॥
तुच्छ बुद्धि कछु अरथ जानिकैं, मनसों विंग उठाये।
औधिज्ञानी श्रुतज्ञानी मानो, सीमंधर मिलि आये॥ ७॥
ये तो आचारज है साँचे, ये आचारज झूठे।
तिनिके ग्रन्थ पढ़ें नित बंदै, सरधा ग्रन्थ अनूठे॥ ८॥
साँच झूठ तुम क्यों कर जानो, झूठ जान क्यों पूजो।
खोट निकाल शुद्ध कर राखो, अवर बनाओ दूजो॥ ९॥
कौन सहामी बात चलावै, पूछैं आनमती तो।
ग्रन्थ लिख्यो तुम क्यों तहिं मानो, जवाब कहा कहि जीतो॥ १०॥
जैनी जैनग्रन्थ के निंदक, हुंडासर्पिनी जोरा।
"द्यानत" आप जानि चुप रहिये, जग में जीवन थोरा॥ ११॥

* * *

४०. जिनवाणी मो मन भावै.....

जिनवाणी मो मन भावै, या संशय तिमिर मिटावैजी ॥ टेक ॥
नव-तत्त्वनि की समझि करावै, स्व-पर भेद दरसावै ।
मिथ्या अलट मिटावण कारण, स्याद्वादमय थावै ॥ १ ॥
चन्द्र-भानु-मणि नाँहि पटंतर, बाहिर तिमिर मिटावै ।
बाह्याभ्यंतर मेटै वाणी, तीन लोक सिर नावै ॥ २ ॥
तप-व्रत-संजम यामैं गर्भित, श्रीगुरु श्रुत में गावै ।
या बिन दूजो शिवपथ नाँहीं, यातैं शुभगति पावै ॥ ३ ॥
रत्नत्रय याही तैं मिलिहै, या बिन नहिं उपजावै ।
'पारस" जौ लूँ शिव नहिं हो है, उर तिष्ठो या चावै ॥ ४ ॥

४१. जिनवाणी है चेतन हीरा जड़ी.....

जिनवाणी है चेतन हीरा जड़ी, जिनवाणी है रत्नत्रय से मड़ी ॥ टेक ॥
सप्त तत्त्व दरशावन हारी, जिनवाणी है अद्‌भुत हीरा जड़ी ॥ १ ॥
जिनवाणी निज-निधि को बतावै, अनुपम सुखमय गुण की भड़ी ॥ २ ॥
भवसागर से पार करन को, जिनवाणी हमारी नौका खड़ी ॥ ३ ॥
जो ना सुनत है यह जिनवाणी, द्वार पै ताही के विपद खड़ी ॥ ४ ॥
जो जो सुनत है यह जिनवाणी, झड़ती है ताके सुख की झड़ी ॥ ५ ॥
जो जो सुनत है यह जिनवाणी, शांति मिलत ताहि वाहि घड़ी ॥ ६ ॥
वाणी-कथित निजतत्त्व जो ध्यावे, मोक्ष मिलत वाहि ताहि घड़ी ॥ ७ ॥
माता तो सो अरज करत हूँ, काटो हमारी कर्मन की कड़ी ॥ ८ ॥

* * *

४२. मुख औंकार धुनी सुनी.....

मुख औंकार धुनि सुनि, अर्थ गणधर विचारै।
रचि-रचि आगम उपदिसै, भविक जीव संशय निवारै॥

दोहा

सो सत्यारथ शारदा, तासु भक्ति उर आन।
छंद भुजंगप्रयात तैं, अष्टक कहौं बखान॥

भुजंगप्रयात

जिनादेश जाता जिनेन्द्र विख्याता, विशुद्ध प्रबुद्धा नमों लोकमाता।
दुराचार-दुर्नैहरा शंकरानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ १॥
सुधा धर्मसंसाधनी धर्मशाला, सुधा तापनिर्नाशनी मेघमाला।
महामोहविध्वंसनी मोक्षदानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ २॥
अखैवृक्षशाखा व्यतीताभिलाषा, कथ संस्कृति प्राकृता देश-भाषा।
चिदानन्द-भूपाल की राजधानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ ३॥
समाधानरूपा अनूपा अक्षुद्रा, अनेकान्तधा स्याद्वादांकमुद्र।
त्रिधा सप्तधा द्वादशांगी बखानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ ४॥
अकोपा अमाना अदंभा अलोभा, श्रुतज्ञानरूपी मतिज्ञानशोभा।
महापावनीभावना भव्यमानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ ५॥
अतीता अजीता सदा निर्विकारा, विषैवाटिकाखंडिनी खगधारा।
पुरापापविक्षेप कर्तृ कृपाणी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ ६॥
अगाधा अबाधा निरंधा निराशा, अनन्ता अनादीश्वरी कर्मनाशा।
निशंका निरंका चिदंका भवानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ ७॥
अशोका मुदेका विवेका विधानी, जगज्जन्तुमित्रा विचित्रावसानी।
समस्तावलोका निरस्ता निदानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ ८॥

जे आगम रुचिधरैं, जे प्रतीति मन माँहि आनहिं।
अवधारहिं जे पुरुष, समर्थ पद अर्थ आनहिं॥
जे हित हेतु बनारसी, देहि धर्म उपदेश।
ते सब पावहिं परम सुख, तज संसार कलेश॥

४३. समयसार की अद्भुत महिमा......

समयसार की अद्भुत महिमा, आज बताऊँ गली-गली।
सुनलो सच्चे सुख के वांछक, धूम मचाऊँ गली-गली॥ टेक॥
समयसार ही तीन लोक में, परमोत्कृष्ट बताया है।
सुखी हुये वे ही जिन-जिनने, समयसार निज ध्याया है।
समयसार बिन सुख न मिलेगा, बात कहूँ मैं खरी-खरी॥ १॥
तर्क छंद साहित्य पढ़े अरु, बहु आगम अभ्यास किया।
पंडित भी कहलाए पर नहिं, समयसार का ज्ञान किया।
समयसार पहचान किये बिन, घूमे जग की गली-गली॥ २॥
तन कर्मों से न्यारा जाना, रागादि में अटक गया!
रागादि भी भिन्न कहें, पर्याय भेद में अटक गया।
समयसार में भेदों से भी भिन्न आत्मा शुद्ध कही॥ ३॥
ज्ञान मात्र ध्रुव धाम शुद्ध सुखमय चिन्मूरत आतमराम।
समयसार कारण परमातम शक्ति अनंतो का गुणधाम।
उपादेय आश्रय करने के योग्य आत्मा शुद्ध यही॥ ४॥

रागादिक दूषण तजे, वैरागी जिनदेव।
मन वच शीश नवाय के, कीजै तिनकी सेव॥
जगत मूल यह राग है, मुक्ति मूल वैराग।
मूल दुहुन को यह कह्यो, जाग सके तो जाग॥

* * *

४४. परम जननी धरम कथनी.....

परम जननी धरम कथनी भवार्णव पार कौ तरनी।
अनक्षरि घोष आपत की, अक्षरजुत गनधरौं बरनी ॥ टेक ॥
निरवेयौ नयनु जोगन ते, भविन कौं तत्त्व अनुसरनी।
विथरनी शुद्ध दरसन की, मिथ्यातम मोह की हरनी ॥ १ ॥
मुकति मन्दिर के चढ़ने कौं, सुगम-सी सरल निसरनी।
अंधेरे कूप में परतां, जगत उद्धार की करनी ॥ २ ॥
तृषा के ताप मेटन कौ, करत अमृत वचन झरनी।
कथंचित-वाद आदरनी, अवर एकान्त परिहरनी ॥ ३ ॥
तेरा अनुभौ करत मोकौं, बनत आनन्द उर भरनी।
फिर पौ संसार दुखिया हूँ, गही अब आनि तुम सरनी ॥ ४ ॥
अरज "बुधजन" की सुन जननी, हरौ मेरी जनम मरनी।
नमूँ कर जोरि मन बचतैं लगा के सीस कौं धरनी ॥ ५ ॥

४५. वस्तुतत्त्व दर्शानी.....

वस्तुतत्त्व दर्शाती जग में, जय जिनवाणी माता।
ज्ञानीजन यों करे स्तुति भक्तिभाव उमगाता ॥ टेक ॥
मिथ्यामति को नाश किया है जय जिनवाणी माता।
सम्यक् दीप जलाने वाली है जिनवाणी माता ॥ १ ॥
आपा-पर का भेद कराती है जिनवाणी माता।
शुद्धातम अनुभूति कराती है जिनवाणी माता ॥ २ ॥
मुक्ति मार्ग दिखावनहारी जय जिनवाणी माता।
सोये भव्य जगाने वाली है जिनवाणी माता ॥ ३ ॥
स्वानुभूति से झरती उर में है जिनवाणी माता।
ज्ञानामृत का पान कराती है जिनवाणी माता ॥ ४ ॥
निज से निज में थिर हो जाऊँ हे जिनवाणी माता।
निज में ही पंचमगति पाऊँ हे जिनवाणी माता ॥ ५ ॥

४६. जान श्रुत पंचमि पर्व महान.....

भ्रात जिनवाणी सम नहिं आन, जान श्रुतपंचमि पर्वमहान।
एकान्तो का नहीं ठिकाना, स्याद्वाद का लखा निशाना॥
मिटता भव-भव का अज्ञान, जान श्रुतपंचमि पर्व महान॥ १॥

केवलज्ञानी की यह वाणी, खिरे निरक्षर तदि समझानी।
सुरनर तिर्यंच सुनते आन, जान श्रुतपंचमि पर्व महान॥ २॥

गणधर हृदय विराजी माता, ज्ञानस्वभाव सहज झलकाता।
सुनत चिन्तत हो भेद-ज्ञान, जान श्रुतपंचमि पर्व महान॥ ३॥

भविजन प्रीतिसहित चितधारे, रवि शशि सम तम को परिहारे।
उस घट प्रगटे पूरन आन, जान श्रुत पंचमि पर्व महान॥ ४॥

मोक्ष दायिका है जिनमाता, तुम पूजक सम्यक निधि पाता।
"नंद" भी अपने आश्रित जान, जान श्रुतपंचमि पर्व महान॥ ५॥

४७. माँ जिनवाणी मुझ अन्तर में.....

माँ जिनवाणी मुझ अंतर में, होकर मुझ रूप समा जाओ।
शांत शुद्ध ध्रुव ज्ञायक प्रभु की, महिमा प्रतिक्षण दरशाओ॥ टेक॥

चैतन्यनाथ की बात सुने से, अद्भुत शांति मिलती है।
मानो निज वैभव प्रकट हुआ, सब आधि व्याधि टलती है॥ १॥

ज्ञायक महिमा सुनते सुनते, बस ज्ञायकमय जीवन होवे।
निज ज्ञायक में ही रम जाऊँ, सुनने का भाव विलय होवे॥ २॥

हे मां तेरा उपकार यही, प्रभु सम प्रभु रूप दिखाया है।
चैतन्य रूप की बोधक मां, मैं सविनय शीश नवाया है॥ ३॥

* * *

४८. शान्ति सुधा बरसाये......

शान्ति सुधा बरसाये जिनवाणी,
वस्तुस्वरूप बताये जिनवाणी ॥ टेक ॥
पूर्वापर सब दोष रहित है,
पाप क्रिया से शून्य शुद्ध है।
परमागम कहलाये जिनवाणी ॥ १ ॥
परमागम भव्यों को अर्पण,
मुक्ति वधू के मुख का दर्पण।
भव सागर से तारे जिनवाणी ॥ २ ॥
राग रूप अंगारों द्वारा,
महा क्लेश पाता जग सारा।
सजल मेघ बरसाये जिनवाणी ॥ ३ ॥
सप्त तत्त्व का ज्ञान कराये,
अचल विमल निजपद दरसावे।
सुख सागर लहराये जिनवाणी ॥ ४ ॥

४९. शिव सुखदानी है जिनवाणी......

शिव सुखदानी है जिनवाणी,
है जिनवाणी है जिनवाणी,
शिव सुख दानी है जिनवाणी ॥ टेक ॥
स्वयं, स्वयं को भूल गयो है,
मोह महातम छाय रह्यो है,
दूर करन सूरज जानी ॥ १ ॥
पर-भावों से भिन्न स्व-आतम,
ज्ञानमूर्ति शाश्वत परमातम,
द्रव्य दृष्टि से दरशानी ॥ २ ॥
जिनवाणी अभ्यास करें जे,
सम्यक् तत्त्व प्रतीति धरें जे,
पावे निश्चय शिव रजधानी ॥३ ॥

स्याद्वाद शैली अतिप्यारी,
वस्तु स्वरूप दिखावन हारी,
अनेकांतमय गुणखानी ॥ ४ ॥
शीश नवावें श्रद्धा लावें,
जिनवाणी नित पढ़े पढ़ावें,
सर्व दुःखों की हो हानी ॥ ५ ॥

५०. मेरा शरण समयसार.....

मेरा शरण समयसार, दूसरो न कोई...२
जा प्रसाद कार्य समयसार सिद्धि होई,
मेरा शरण समयसार, दूसरो न कोई ॥ टेक ॥
अविनाशी ब्रह्मरूप, अविचल अज चितस्वरूप,
शुद्ध बुद्ध स्वतः सिद्ध, जे प्रभु में सोई ॥ १ ॥
प्रगट रूप का आधार, निश्चय से निराधार।
ये ही गुरु, ये ही शिष्य, भक्त प्रभु वो ही ॥ २ ॥
सहजानन्द सहज ज्ञान, निज परिणति का निधान।
जिन चीन्हा उन परिणति, निर्विकल्प होई ॥ ३ ॥
समयसार नहिं जाने, बाह्य ज्ञान बहुत जाने।
भव भव में भटके, सुखी नहीं होई ॥ ४ ॥
एक समयसार जाने, और कछु नाहिं जाने।
समयसार रूप होई, परम सुखी होई ॥ ५ ॥
रूप मेरा समयसार, देव-गुरु समयसार।
शास्त्र कहे समयसार, समयसार होई ॥ ६ ॥
गाओ, चिंतो समयसार, श्रद्धो, ध्यावो समयसार।
समयसार रूप होय, परम सुखी होई ॥ ७ ॥

* * *

५१. परम उपकारी जिनवाणी....

(तर्ज - तुम्हारे दर्श बिन स्वामी)

परम उपकारी जिनवाणी, मैं ज्ञायक हूँ बतायो है।
हुआ निर्भार अंतर में, परम आनंद छायो है ॥ १ ॥

अहो परिपूर्ण ज्ञानरूप, प्रभु अक्षय विभवमय है।
हुआ हूँ तृप्त निज में ही, ना बाहर कुछ सुहाता है ॥ २ ॥

उलझकर दुर्विकल्पों में, बीज दुःख के रहा बोता।
धर्म माता ! मुझे आनंदमय, अमृत पिलाया है ॥ ३ ॥

नहिं अब लोककी चिंता, नहीं कर्मों का भय किंचित।
ध्येय निष्काम ध्रुव ज्ञायक, अहो दृष्टि में आया है ॥ ४ ॥

मिटी भ्रांति मिली शांति तत्त्व अनेकांतमय पाया।
सार वीतरागता लखकर, शीश सविनय नवाया है ॥ ५ ॥

५२. जिनवाणी माता, शरण तिहारी आयो.....

जिनवाणी माता, शरण तिहारी आयो।
भव सागर में रुलते रुलते, तीर नहीं मैं पायो ॥ टेक ॥
जग असार अब तो बहु लख के, शरण तिहारी आयो।
चरण शरण मिल जावे माता, अब तो बहुत भ्रमायो ॥ १ ॥

निज स्वरूप जानो नहिं साँचो, सो मैं बहुत भ्रमायो।
तुम से ही पायो मैं मारग, अन्य बहुत भटकायो ॥ २ ॥

जिनने तेरी शरणा लीनी, भव को कष्ट नशायो।
सच्चा सुख मेरे ही में है, ज्ञान यथारथ पायो ॥ ३ ॥

तुम्हरे सांचे मारग माहीं, सिद्ध अनन्ते थायो।
ऐसो पद मैं भी अब पाऊँ, चरनन शीश नवायो ॥ ४ ॥

* * *